"जाकी सिफत करे सुभान"

श्रीमती कंचन आहूजा (जयपुर)

दुनियाँ में ऐसे लोग तो बहुत हैं जो अपने-अपने परमात्मा को याद करते हैं और उनका गुणगान गाया करते हैं परन्तु ऐसे लोग बिरले ही होते हैं जिन्हें स्वयं खुदा याद करते हैं और हर पल उनकी सिफत करते हैं। दुनियाँ के जीव जिनकी जहाँ तक पहुँच है अपने परमात्मा को याद करते हैं। उनकी अराधना करते हैं। ब्रह्मा, विष्णु महेश भी अपने धाम में बैठकर उस पूर्ण ब्रह्म अक्षरातीत की अराधना करते हैं। वे सब देवी, देवता उनकी अराधना तो करते हैं। परन्तु उनके पास रूहों जैसा असल इश्क न होने के कारण उस मंजिल तक नहीं पहुँच सकते परन्तु वह रूह मोमन ब्रह्म सृष्टि पूर्ण ब्रह्म के अंग होने के कारण उनका अपने धनी अक्षरातीत से ऐसा अटूट नाता है जिसे स्वयं खुदा भी चाहे तो नहीं तोड़ सकता और एक तन होने के कारण वे एक दूसरे से जुदा हो ही नहीं सकते ऐसे रूह मोमिन जो श्री राजी के ही अंग हैं उनकी सिफत स्वयं अपने मुख से करते हुए कह रहे हैं–

लाड़लियां लाहुत की, जाकी असल चौथे आसमान।
बड़ी बड़ाई इनकी, याकी सिफत करे सुभान ॥

ऐसे रूह मोमन जिनकी सिफत स्वयं खुदा करते हैं और रूहों के बिना वह एक पल भी नहीं रह सकते। फिर वह खेल में रहे या परम धाम श्री राजी हर पल उनके साथ हैं। जैसा कि लिखा भी है–

रह न सकू मैं रूहों बिना, रूहे रह न सके मुझ बिन।
जब पहचान याको होवही तब सहे न बिछोहा एक छिन॥

अब प्रश्न यह उठता है। कि श्री राजी इन रूह मोमिनों की सिफत क्यों करते हैं जब कि विष्णु और देवी देवता इतनी तपस्या के बाद भी उस पूर्ण ब्रह्म अक्षरातीत के नाम और धाम को प्राप्त नहीं कर सके, तो दुनियाँ के जीवों की तो बात ही क्या है। कि वह पूर्ण ब्रह्म अक्षरातीत के बारे में कुछ जान सकें, तो उस पूर्ण ब्रह्म अक्षरातीत से रूह मोमिनों का ऐसा कौन सा सम्बन्ध है जिसके कारण उन्हें इस नाबूद की दुनियाँ में आना पड़ा और अपना ठिकाना भी बनाया तो रूहों के दिल को, जैसा कि वाणी में कहा भी है–

ऊपर तले न अर्श कहया, अर्श कहया मोमिन कलुब।
ए जाने अरवाहें अर्श की, जिनका हक महबुब ॥

कारण स्पष्ट है कि रूह मोमिन श्री राजी के अंग है। उनका सम्बन्ध सूरज और सूरज की किरण, सागर और सागर की लहरों जैसा है। इसलिए वो कहीं भी रहें श्री राजी हर पल अपनी रूहों के साथ ही हैं।

Nijanand App

रूह मोमिनों की सिफत करते हुए श्री राजी ने आप ही लिखा है। कि तुम मुझे एक बार याद करो मैं दस बेर जी-जी करता हूँ और पहले मैं तुहें याद करता हूँ तो तुम्हें मेरी याद आती है। और ये ही कारण है कि उनकी रूह मोमिन ब्रह्म सृष्टि इस दुनियाँ में खेल देखने आई तो अपनी निसबत के कारण उन्हें भी इस दुनियाँ में आना पड़ा और वाणी में स्वयं श्री राजी पुकार पुकार कह रहे है कि ए रूहो तुमसे मेरी निसबत है और इसी निसबत के कारण मुझे तन ऐसे निपट निजस तनों जैसा बनाना पड़ा। जैसा कि राजी न वाणी में फरमाया है।

कहे नुरजमाल कुरान में, मिटाये ले सब अन्धेर।
तुम एक साद करो मुझको, मैं जी-जी करूं दस बेर॥

औलिया लिला दोस्त कर, नुरजमाल लिखत।
ऐसे निजस तन नासुती, जिनसो मेरी निसबत॥

हके लिखया कुरान में, पहले मेरा प्यार।
जो तुम पीछे दोस्ती करो मुझसो तो भी मेरे सच्चे यार॥

ऐसे रूह मोमिन जिनको स्वयं खुदा हर पल याद करते हैं। उन रूह मोमिनो के लिए यहाँ आशिक बन के आए और परमधाम की सब न्यामत हमारे ही लिए लाए और परमधाम की तो गुझ खिलवत की बातें जिसकी सुध अक्षर ब्रह्म को भी नहीं है, वह गुझ खिलवत की बातें हम रूह मोमिनों की खातिर ही इस दुनियाँ में आकर ही जाहिर की, और एक-एक रूह को जगाने के लिए क्या-क्या नहीं किया अपने घर को त्यागा, राज पद को छोड़ा अपनी रूहों को जगाने के लिए पद यात्रा भी की और यहाँ तक कि भीख भी माँगी और आशिक बन के भी दिखाया जैसा कि वाणी में भी बताया है।

मैं आशिक तुम्हारा कहलाया, लिखे इश्क के बोल।
मैं माशुक कर लिखे तुमको, सो भी लिए न तुम कौल॥

और भी–

आशिक मेरा नाम रूह अल्ला, आशिक मेरा नाम।
इश्क मेरा रूहन सो, उमत में मेरा आराम॥

इसके अतिरिक्त यहाँ आकर हमें अपनी और अपने धनी की पहचान करवाई और बताया कि मैं तुम्हारे ही कारण आया हूँ तुम्हारा हमारा मूल का नाता है।

रूहें तुम मेरे तन हो, तुम सो इश्क जो मेरे दिल।
ए क्यों कर पाओ बला सिने, जो सहूर करो सब मिल॥

ये सच है कि राजी से हमारी मूल निसबत या सम्बन्ध न होती तो जो न्यामेत हमें श्री राजी ने दी हैं, कभी प्राप्त न होतीं। यदि हमारे अवगुणों को देखते तो इस काबिल भी नहीं थे कि भव सागर से पार हो सकते।

न रया भरोसा हमको कि भवजल उतरे पार।
इन जुबा केती कहुँ, मेहर को नाहीं सुमार॥

एक तरफ हमारे अवगुणो को देखें और दूसरी तरफ श्री राजी की मेहर को देखें तो हम जैसे नाचीजों को राजी ने ऐसे अखण्ड सुख दिए हैं जिसे प्राप्त करने के कभी काबिल नहीं थे। वास्तव में राजी तो मेहर करके हमें इस माया से हाथ पकड़-पकड़ कर निकाल रहे हैं परन्तु हम माया के नशे में डूब कर इसमें ही डूबते जा रहे हैं और राजी हमें समझाते हुए कह रहे हैं।

तुम स्याने मेरे साथ जी, जिन रहो विषे रस लाग।
पांव पकड़ कहे इन्द्रावती, उठ खड़े रहो जाग॥

Nijanand App

इस प्रकार रूहों का जितना बड़ा मरातबा है श्री राजी अपनी मेहर भी पूरी कर रहे हैं। और अपनी पूर्ण पहचान करवा रहे हैं। परन्तु हमें माया का नशा इतना चढ़ा हुआ है कि हमें कभी अपने धनी की याद नहीं आती और हमें अपने धनी से बिछड़ने का जरा दर्द नहीं आता। जबकि वाणी द्वारा सबको समझ भी है। अब तो हम ये भी नहीं कह सकते कि हमारे पास इलम नहीं या समझ नहीं वाणी में स्पष्ट लिखा हुआ है। कि जब तक हम भूले रहे। तब तक तो सब माफ कर दिया और समझ आ जाने के बाद भी यदि हम भुलते हैं तो उसके बाद जो हशर होगा वह असहनीय होगा। जैसा कि वाणी में लिखा भी है।

जब लग भुली बचन, तब लग नहीं दोष।
जब जागी एक इल्मे, तब सिर हुआ अफसोस॥

और रूहों को समझाते हुए कह रहे हैं–

श्री महामति कहे मोमनो जिन कराओ हाँसी तुम।
याद करो बीच वतन के, किया रब्द आगू खसम।

इस प्रकार जिस तरह से रूहों की बजुरगी है, श्री राजी अपनी मेहर पूरी किए जा रहे हैं। और अपने कहे मुताबिक सब किए जा रहे है और अब जब हमें वाणी से सुध मिल गई कि हमने भी परमधाम में श्री राज जी से कुछ वायदे किए थे और वे वायदे हम यहाँ आकर भूल गई तो श्री राज तो अपने कहे मुताबिक इस दुनियाँ में झूठा तन धारण करके आए और जो वायदे हम यहाँ आकर भूल गई उनकी याद दिला रहे हैं और अब जब हमें वाणी से समझ आ गई है और हम वास्तव में श्री राज के अंग है और श्री राज हमारे है तो हमें कभी अपने धनी से मिलन का दर्द क्यों नहीं आता हमें धनी की याद क्यों नहीं आती और आज भी हमें धनी नहीं माया ही अच्छी क्यों लगती है बात स्पष्ट है अब हम जान बूझ कर अनजान बने हुए हैं जब कि हमने कहा तो यहाँ तक था कि धनी यदि हम तुम्हें भूल जाय तो हम मोमन ही नहीं अब जब हम दावा लेते हैं कि हम तुम्हारे हैं और आप हमारे हैं तो हम देखें कि हमारी रहनी कहनी क्या होनी चाहिए और अब जान बूझ कर अनजान बनते हैं तो हम किसी को नहीं स्वयं अपने आपको धोखा दे रहे हैं क्योंकि यदि हम मन में भी कोई बात सोचते हैं तो धनी तो सब जानते हैं क्योंकि वो तो दिल में ही बैठे है। जैसे कि–

बात उठावे जो मन में, होती सबे वतन।
एक जर्रा छिपी न रहे, यों कोई भूलो जिन॥

और बस इतनी सी बात याद रखे कि श्री राज हमारे हैं और वो हमारे दिल में ही बैठे और इस बात का डर रखे कि श्री राज सब जानते हैं और कोई भी बुरा कार्य अगर हमसे होता है तो श्री राज सब देख रहे हैं और एक बात और याद रखे मैं श्री राज की हूँ और जब मैं श्री राज की हूँ तो मैं कर क्या रही हूँ जो कुछ वाणी में लिखा है मेरी रहनी करनी उस मुताबिक है या नहीं और नहीं तो अपनी रहनी करनी को सुधारें और श्री राज मेरे हैं और मेरे ही दिल में बैठे हैं तो यही बैसे परमधाम के सुखों को प्राप्त करूँ जैसे कि लिखा भी है–

इतही बैठे जागे घर धाम वाली चौपाई का चरितार्थ करूँ मैं कुछ नहीं मैं धनी की हूँ और अपना सर्वस्व धनी के चरणों में समर्पित कर दें।

Nijanand App